Shree Krishna International Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN: xxxx-xxxx (Online)

माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृति का अध्ययन

शिवानी भारद्वाज
प्रवक्ता
स्वामी शुकदेवानंद विश्वविद्यालय, शाहजहाँपुर

शोध सार

भारतीय समाज बहुधार्मिक, बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक स्वरूप वाला समाज है, जहाँ विविधता में एकता की अवधारणा सदैव राष्ट्रीय जीवन का आधार रही है। भारतीय संविधान ने देश को एक लोकतांत्रिक एवं पंथनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में स्थापित किया है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को समान धार्मिक स्वतंत्रता एवं अधिकार प्राप्त हैं। तथापि वर्तमान सामाजिक परिवेश में बढ़ती सांप्रदायिकता, धार्मिक असहिष्णुता तथा सामाजिक विभाजन धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के समक्ष गंभीर चुनौती प्रस्तुत कर रहे हैं। इस संदर्भ में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि विद्यालयी शिक्षा ही विद्यार्थियों में सहिष्णुता, समानता एवं राष्ट्रीय एकता के मूल्य विकसित करती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। अध्ययन में कला एवं विज्ञान वर्ग, लिंग, धर्म तथा ग्रामीण-शहरी परिवेश के आधार पर विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्ष अभिवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा शाहजहाँपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को अध्ययन की जनसंख्या माना गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित "धर्मनिरपेक्षता अभिवृत्ति मापनी" का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं 't' परीक्षण द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति सामान्यतः सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यमान है। साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ कि सामाजिक पृष्ठभूमि एवं परिवेश विद्यार्थियों की धार्मिक दृष्टि एवं सहिष्णुता को प्रभावित करते हैं। अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि विद्यालयों में नैतिक शिक्षा, सर्वधर्म समभाव तथा सामाजिक सहअस्तित्व पर आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देना वर्तमान समय की आवश्यकता है।

कुंजी शब्द

धर्मनिरपेक्षता, अभिवृत्ति, माध्यमिक शिक्षा, सांप्रदायिकता, विद्यार्थियों का दृष्टिकोण

शिवानी भारद्वाज
shivani.mamabc1234@gmail.com

Paper Received: 21/05/2026
Paper Revised: ----------
Paper Accepted: 28/05/2026

शिवानी भारद्वाज
52-58

प्रस्तावना

भारत एक विशाल प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र है संविधान में भारत को लोकतांत्रिक राज घोषित किया है। इस प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सभी नागरिकों को सामान राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं। पंथनिरपेक्षता भी नागरिकों के अधिकारों से संबंधित है राज्य का अपना कोई धर्म नहीं है राज्य एक धर्म के लोगों को दूसरे के ऊपर प्राथमिकता नहीं देता नागरिकों को अपना धर्म मानने और उसके अनुसार उपासना करने का समान अधिकार है। यदि विभिन्न धर्म मानने वालों को समान अधिकार प्राप्त नहीं होंगे तो वास्तव में देश प्रजातांत्रिक नहीं रह सकेगा। वर्तमान भारतीय परिवेश में यह परिलक्षित होता है की स्वतंत्रता प्राप्ति के 78 साल गुजर जाने के बाद भी हम सामाजिक एवं आर्थिक समानता की प्राप्ति के साधन लक्ष्य से बहुत दूर हैं। धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र की स्थापना करते समय उस समय के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं अन्य नेताओं ने यह आशा की थी कि शिक्षा के प्रसार एवं देश के औद्योगीकरण के फलस्वरुप सांप्रदायिक भावनाएं क्रमशः कम हो जाएगी परंतु परिणाम विपरीत ही रहा। विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा एवं उद्योग में विशेष बढ़ोतरी के बावजूद धर्मनिरपेक्षता एक दिवस स्वप्न लेकर बनकर रह गई है आज भी धर्मनिरपेक्षता समाज के निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति से हम काफी दूर हैं सांप्रदायिकता लोकतंत्र के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है इसी कारण लोग अपने धर्म को अन्य धर्म से ऊंचा मानते हैं। यहां तक की अपने धार्मिक हितों के लिए राष्ट्रीय हित का बलिदान कर देते हैं स्वतंत्रता से पूर्व वर्तमान भारत पाकिस्तान तथा बांग्लादेश एक ही राज्य थे। जिस समय राष्ट्रीय आंदोलन प्रारंभ हुआ उस समय सब धर्म ने भारत को स्वतंत्र करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी ।अंग्रेज धर्म के नाम पर राष्ट्रीय आंदोलन में फूट डालने में सफल हो गए। राष्ट्र दो भागों भारत पाकिस्तान में विभाजित हो गया सांप्रदायिक दंगे हुए यहां तक की अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी की हत्या कर दी संविधानिक रूप से भारत अब एक पंथनिरपेक्ष राज्य है भारत उन सभी हिंदू मुस्लिम ईसाई आदि का देश है जिनके यहां जन्म हुआ यही निवास करते हैं वास्तव में भारतीय संस्कृति इतनी सुंदर व धनी है क्योंकि यहाँ विभिन्न धर्म की संस्कृति है जिसमें विविधता में एकता है संविधान में अल्पसंख्यकों को हितों की रक्षा के लिए कुछ विशेष अधिकार प्रदान किए गए हैं इससे भी अपनी गरिमा को बनाए रखें संविधानिक व्यवस्था इस प्रकार से की गई है कि देश में रहने वाले सभी लोग सुरक्षित रहें तथा सभी लोग अपनी गरिमा को बनाए रखते हुए दूसरे के साथ अपनेपन व भाईचारा की भावना से बहुत ओत प्रोत रहे। धर्म के आधार पर उनमें आपस में किसी प्रकार की कटुता न पनपे लोगों में धर्मनिरपेक्षता की प्रवृत्ति विकसित है किंतु वर्तमान परिवेश में घटित हो रहे क्रियाकलापों से ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

धर्मनिरपेक्षता के विकास में सबसे बड़ी बड़ा सांप्रदायिकता है भारत में दो प्रमुख संप्रदाय हैं हिंदू तथा मुस्लिम। इनमें से हिंदू अनेक संप्रदायों में बटे हैं सभी संप्रदाय अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानते हैं और दूसरों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं इसके फलस्वरुप सभी संप्रदायों से में एक दूसरे के प्रति द्वेष व कटुता पाई जाती है इसके कारण देश की एकता को महान क्षति पहुंच रही है आज के संघर्षपूर्ण युग में हम आगे तभी बढ़ सकते हैं जब हमारी एक भाषा तथा हमारे विचार धर्मनिरपेक्ष हो क्योंकि इसी के माध्यम से देश के सभी व्यक्ति निकट आ सकते हैं तथा यदि हम राष्ट्र के रूप में एक होना चाहते हैं तो हमें भाषा एवं धार्मिक विरोधों का अंत करके संपूर्ण देश के लिए एक भाषा एवं धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को अपनाना होगा। भारतीय अर्थशास्त्री प्रोफेसर गौर ने कहा है कि ष्सार्वजनिक जीवन में धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बार-बार बल दिया गया है और यह भारतीय राष्ट्र के धर्मनिरपेक्ष रूप में प्रकट हुई है परंतु व्यक्तिगत जीवन के तर्क बुद्धिमान एवं सार्वजनिक जीवन के धर्मनिरपेक्षवाद के संबंध बनाए रखने पर संक्षिप्त ध्यान या बल नहीं दिया गया है। ''धर्मनिरपेक्षता भारत जैसे जटिल एवं अनेक धर्मों और समाज वाले राज्य के लिए बुद्धिमानी की नीति है यह वह मूल्य है जिसे देश की शिक्षा व्यवस्था में समर्थन एवं अभिव्यक्ति मिलनी चाहिए यह धर्मनिरपेक्षता को सामाजिक मूल्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है तो धार्मिक एवं संप्रदाय के आधार पर प्रचलित शिक्षण संस्थानों के गठन से इसका मेल सरलता के साथ नहीं बढ़ाया जा सकता। इस आधारों पर आवंटित शैक्षिक अफसर के साथ तो इनका मेल कदापि नहीं हो सकता विभिन्न संस्थाओं में धर्मनिरपेक्षता अन्य धर्म एवं अन्य सामाजिक वर्गों के प्रति विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अभिव्यक्तियों के रूप में व्यक्त होगी। वर्तमान समय में सांप्रदायिकता शक्तियों भारतीय राष्ट्रीय धर्मनिरपेक्षता को

गंभीर चुनौती दे रही है। पिछले 5-6 वर्षों में सांप्रदायिकता शक्तियों ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अपने को संगठित कर लिया है धर्मनिरपेक्षता समाज की स्थापना की दिशा में पहला प्रभावशाली कदम सहनशीलता की भावना का विकास करके उठाया जा सकता है भारत जैसे विचार और विभिन्न धर्मालंबियों वाले देश के लिए सांप्रदायिक सद्भावना आवश्यक है देश में पहली सांप्रदायिक अशांति टूटते विश्वास धर्मान्धता की कदर पर खड़े देश की नफरत की आग से बचने के लिए धर्मनिरपेक्षता जरूरी है सांप्रदायिकता देंगे किसी भी सभ्य समाज के लिए कलंक होते हैं और व्यक्ति की असभ्यता को दर्शाते हैं भारत के हर क्षेत्र में हिंदू और मुसलमान एक साथ रहते आए हैं यदि सद्भावना का वातावरण नहीं रहा तो दोनों समुदाय व्यक्ति एक दूसरे से सहमें सहमें रहेंगे और आचार विचार खुलकर नहीं कह पाएंगे इससे तनाव का महौल बना रहेगा अतः सामाजिक जीवन को उन्नत और प्रगतिशील कुशल बनने के लिए भारत में धर्मनिरपेक्षता की अत्यंत आवश्यकता है।

उपयुक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि भारत में सांप्रदायिक सद्भाव आवश्यक है अपनी उन्नति तथा आने वाली पीढ़ी को एक सहज व स्वाभाविक तनाव रहित समाज सौंपने के लिए उनमें धर्मनिरपेक्षता की भावना का विकास अत्यंत आवश्यक है हिंदुओं को समझ लेना चाहिए कि भारत मुसलमानों का भी देश है और उसमें अधिकांश भाग की भारत के प्रति प्रतिबद्ध हैं। मुसलमान को भी देश की मुख्य धारा से जुड़ना चाहिए जिससे धर्मनिरपेक्षता की छवि को अक्षीण रख सकें।

समस्या कथन-

यह शोध पत्र ''माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृति का अध्ययन' ' नामक शीर्षक पर आधारित है ।

अध्ययन के उद्देश्य-

1- माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

2- माध्यमिक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग में अध्यनरत विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।

3- लिंग भेद के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

4- माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की उनके धर्म के परिपेक्ष में धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

5- ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में निवास के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन विद्यार्थियों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं-

प्रस्तुत अध्ययन को संपादित करने के लिए शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है -

1- शैक्षिक समूह कला एवं विज्ञान वर्ग के आधार पर धर्मनिरपेक्षता के प्रति विद्यार्थियों की आवृत्ति में अंतर नहीं है।

2- लिंग भेद के आधार पर धर्मनिरपेक्षता के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में अंतर नहीं है।

3- विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृति धर्म से प्रभावित नहीं है।

4- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृति में अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमन-

समय एवं साधन की कमी को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन शाहजहाँपुर जनपद के माध्यमिक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग में अध्यनरत विद्यार्थियों पर किया गया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन-

1- बिणा दुबे ने सामाजिक समस्या समाधान योग्यता तथा धर्मनिरपेक्ष मानसिकता के विकास के लिए न्यायिक प्रचच्छा शिक्षण प्रतिमान की प्रभावोदकता ज्ञात करने के लिए एक अध्ययन किया। न्यायदर्श में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एम.एड कक्षा के 16 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। प्रयोगिक व नियंत्रित समूह में से प्रत्येक में आठ विद्यार्थी थे तथा समूह बुद्ध की दृष्टि से तुल्य थे शोधकर्ता ने बुद्धि के मापन हेतु करुणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित धर्मनिरपेक्षता अभिव्यक्ति तथा सामाजिक समाधान योग्यता के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली प्रयोग की। पूर्व प्रशिक्षण उत्तर परीक्षण नियंत्रण समूह अभिकल्प प्रयोग किया गया विद्यार्थियों ने न्यायिक प्रचच्छा शिक्षण क्षेत्र में भाग लिया था तथा प्रदन्तों का सह प्रसारण विश्लेषण तथा सांख्यिकी विश्लेषण किया। इस अध्ययन से निष्कर्ष निकला की न्यायिक प्रचच्छा शिक्षक सूत्रों में प्रतिभागिता के परिणामस्वरुप सामाजिक समाधान योग्यता तथा धर्मनिरपेक्ष मानसिकता विकसित होती है। हमारे शिक्षकों का विद्यार्थियों के मूल्य वर्धन दृष्टिकोण कैसे हैं? वे किस सीमा तक धर्मनिरपेक्ष हैं?

2- नूरजहां मलिक व तारामोहन राव (1966)द्वारा हैदराबाद में कुछ वर्ष पूर्व भारतीय युवकों के धार्मिक मूल्यों का अध्ययन किया गया यह अध्ययन हैदराबाद की पाठशाला महाविद्यालय उस्मानिया विश्वविद्यालय के 310 विद्यार्थियों पर किया गया था इसमें 160 छात्र 150 छात्राएं थीं 150 पाठशालाओं के विद्यार्थी थे। 140 में से 90 छात्राओं नेता 100 में से 40 छात्राओं ने अपने पाठशाली दिनों में किसी न किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा पाई थी 92 में से 69 मुसलमान विद्यार्थियों ने तथा 108 हिंदू विद्यार्थियों में केवल 36 विद्यार्थियों ने अपनी पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा पाई थी अधिकांश विद्यार्थी ईश्वर के अस्तित्व उसकी आवश्यकता में विश्वास करते थे। कला के विद्यार्थी विज्ञान के विद्यार्थियों से अधिक धार्मिक पाए गए।

3- कुमार विनोद ने स्नातक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की अभिवृद्धि का अध्ययन किया है इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में बरेली जनपद के 230 विद्यार्थियों से प्रदत्त संकलन किया जिसे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है-

1- स्नातक स्तर के अध्यनरत विद्यार्थियों के धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति सामान्य थी।

2- कला एवं विज्ञान वर्ग के आधार पर विद्यार्थियों के धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृति में अंतर नहीं पाया गया।

3- धर्म-निरपेक्षता के प्रति विद्यार्थियों की अभि वृत्ति लिंग से प्रभावित नहीं थी।

4-धर्म के आधार पर विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिव्यक्ति में अंतर नहीं था।

5- निवास स्थान के आधार पर धर्म-निरपेक्षता के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में अंतर पाया गया।

6- शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक धर्मनिरपेक्ष थे।

7- अनुचित और सामान्य जाति के विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति सार्थक अंक पाया गया।

चौधरी के के (1998) ने धर्मनिरपेक्षता के प्रति अध्यापकों की धर्मनिरपेक्षता की अभिवृत्ति का अध्ययन किया है इस अध्ययन में फैजाबाद जनपद के पांच तथा शाहजहाँपुर जनपद के सात तथा कुल 12 माध्यमिक विद्यालय में सन 1997-98 में अध्यापनरत 230 अध्यापकों से प्रदत्त संकलन किया गया है ।इसमें 134 पुरुष तथा 96 महिला शिक्षक थी। दत्त संकलन हेतु अंशु मेहरा तथा दुर्गानंद सिन्हा द्वारा निर्मित सेक्लूर एटटेट्रियुट स्केल का प्रयोग किया गया है । इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्न है-

1- धर्म-निरपेक्षता के प्रति अध्यापकों की अभिवृति की सामान्य थी।

2- महिला अध्यापकों की अपेक्षा पुरुष अध्यापकों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक थी।

3- लिंग भेद के आधार पर पुरुषों तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में अंतर विद्यमान था।

4- इस्लाम धर्म के अध्यापकों की अपेक्षा हिंदू धर्म के अध्यापकों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक थी किंतु इन दोनों समूह के अध्यापकों में सार्थक अंतर नहीं था।

5- शहरी अध्यापकों की अपेक्षा ग्रामीण अध्यापकों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में अंतर पाया गया।

6- अनुसूचित जाति के अध्यापकों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिव्यक्ति सामान्य एवं पिछड़ी जाति के अध्यापकों के प्रति अधिक सकारात्मक पाई गई। सामान्य जाति के अध्यापकों की अभिवृति अपेक्षाकृत सबसे कम सकारात्मक थी। जाति के आधार पर अध्यापकों की धर्मनिरपेक्ष का निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति के सार्थक अंक पाया गया।

इस साहित्य के अध्ययन से सम्बन्धित जो अध्ययन उसका विवरण प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना है। फलतः अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध की वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यायदर्श-

प्रस्तुत अध्ययन में शाह जहांपुर के विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों को समष्टि अथवा जनसंख्या माना गया है ।

अध्ययन में प्रयुक्त चर-

प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्रता एवं आश्रित चरों का समावेश है ।

अनुसंधान कार्य हेतु प्रयुक्त उपकरण-

प्रस्तुत अध्ययन हेतु उपकरण के चयन पर ज्ञात हुआ कि अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति से संबंधित उपकरण उपलब्ध नहीं है। अतः प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधकर्ता अपने निर्देशक के निर्देशन में निम्न उपकरण का निर्माण किया जिसका नाम धर्म-निरपेक्षता अभिवृत्ति मापनी है।

प्रश्नावली का निर्माण-

मापनी को बनाने के पद निम्नलिखित हैं -

1- कथनों का संकलन

2- अंतिम कथनों का चुनाव।

सांख्यिकी विधियां-

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान मानक विचलन एवं टी मान की गणना की गई है छात्रों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृति को मापने के लिए हर व्यक्तिगत छात्र के द्वारा प्राप्त किए गए अंकों के आधार पर आवृत्ति तालिका का निर्माण किया प्राप्त आवृत्तियों को मध्यमान मानक विचलन व टी मान के द्वारा विशेषण किया गया है।

अध्ययन के शैक्षिक उपयोग- शिक्षा का कार्य भावनाओं के अनुशासित संवेगों को नियंत्रित परिणाम को उत्तेजित धार्मिक भावनाओं को विकसित और नैतिकता को अभिवृत्ति करना है तथा विद्यार्थियों में उचित धार्मिक भावनाओं एवं संवेगों तथा नैतिकता को अभिवृत्ति करने के लिए विद्यार्थियों में धर्म-निरपेक्षता की भावना का विकास करना अति आवश्यक है माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन

किया गया तो अध्ययन रत विद्यार्थियों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिवृति सामान्य पाई गई विद्यार्थियों में धर्म-निरपेक्ष आवृत्ति का अधिकतम विकास हो सके इसके लिए विद्यालयों में प्रतिदिन सर्वधर्म प्रार्थना सभा विभिन्न धार्मिक ग्रंथो से उद्धत नैतिक मूल्यों को ग्रहण करना महापुरुषों के जन्म दिवस एवं धार्मिक त्यौहार एवं धार्मिक स्थलों का भ्रमण कराया जाए जिससे विद्यार्थियों में जाति धर्म अर्थ व अन्य किसी प्रकार भेदभाव उत्पन्न न हो पाए।

संक्षेप में यह भी कहा जा सकता है कि हमारी संपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था इस दृष्टि से की जानी चाहिए जिससे विद्यार्थियों में धर्म-निरपेक्षता की अभिवृति सुदढ़ हो ताकि वे एक उत्तम समाज की स्थापना में अपना योगदान दे सके।

भावी शोध हेतु सुझाव-

1- प्रस्तुत अध्ययन में शाहजहांपुर परिक्षेत्र में स्थित विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है। भविष्य में इसे विस्तृत क्षेत्र पर अध्ययन किया जा सकता है।

2- यह अध्ययन विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर किया गया है भविष्य में इसे स्नातक स्तर स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों पर किए जाने की आवश्यकता है।

3- भावी शोधकर्ताओं के लिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययन विद्यार्थियों की धर्म-निरपेक्षता के अभिवृत्ति का अन्य शैक्षिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिव्यक्ति से तुलनात्मक अध्ययन शोध का विषय हो गया है।

4- भावी शोधकर्ता शिक्षित एवं अशिक्षित व्यक्तियों की धर्म-निरपेक्षता के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन भी कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2014) भारतीय समाज और शिक्षा. नई दिल्ली- विकास पब्लिशिंग हाउस।

2. चौबे, एस. पी. (2018) शैक्षिक मनोविज्ञान. आगरा- विनोद पुस्तक मंदिर।

3. माथुर, एस. एस. (2016) शिक्षा का समाजशास्त्र. मेरठ- इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।

4. गुप्ता, एन. एल. (2015) मूल्य शिक्षा. नई दिल्ली- राधा पब्लिकेशन्स।

5. बसु, डी. डी. (2019). भारतीय संविधान का परिचय. नई दिल्ली- लेक्सिसनेक्सिस बटरवर्थ्स।

6. क्मूमलण् श्र. (2004). क्मउवबतंबल ंदक म्कनबंजपवद. छमू ल्वता रू डंबउपससंद च्नइसपबंजपवदण्

7. भटनागर, ए. बी. (2017). शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन. आगरा- आर. लाल बुक डिपो।

8. रवि कुमार एवं मेहंदीरेत्ता, कुलदीप. (2020). भारतीय शिक्षा दर्शन. नई दिल्ली- एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।

9. दिनकर, रामधारी सिंह. (2013). संस्कृति के चार अध्याय. इलाहाबाद- लोकभारती प्रकाशन।

10. चौबे, अनिल कुमार. (2016). धर्मनिरपेक्षता और भारतीय दर्शन. वाराणसी- विश्वविद्यालय प्रकाशन